Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

भारतीय अर्थव्यवस्था का वर्तमान परिपेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Arjun Singh Bhaghel*

Assistant Professor, Commerce-Rani Durgawat Govt. PG College, Mandala (MP)

सारांश :– सामान्यता भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में यह कहा जाता है – ''भारत एक धनी देश है, किन्तु यहॉ के निवासी निर्धन है।'' वास्तव में यह कथन विरोधाभास की स्थिति को व्यक्त करता है। देश धनवान है किन्तु लोग गरीब है। यदि भारत की प्राकृतिक सम्पदा एवम् मानवीय साधनों पर विचार किया जाय तो यह कथन सही है कि भारत एक धनी देश है। प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता के ही कारण भारत को 'सोने की चिड़िया'कहा जाता था। किन्तु यहॉ के निवासियों के जीवन स्तर, कुपोषण, रूगणता, विपन्नता के कारण ही यह कहा जाता है कि यहॉ के निवासी गरीब है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत अनेक प्रयास किए गए है और इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था में देखने को भी मिला रहा है। भारत ने अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन किए है। उदाहरण के लिए कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति को अपनाए जाने से देश में खाद्यान्न के क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। उद्योग के क्षेत्र में आधारभूत एवं भारी उद्योगों की स्थापना की गयी है और भारत विश्व के 10 बड़े औद्योगिक राष्ट्रो के अन्तर्गत आता है। नियोजित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार हुआ है। बैंक, बीमा, कम्पनियों, दूरसंचार, डाकसेवा, यातायात के साधनों में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। इससे प्रतिव्यक्ति आय, बचत, एवं निवेश की दरों में भी वृद्धि हुई है। इससे यह प्रतीत होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर की गति धीमी है परन्तु सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए सतत् प्रयासरत है।

वर्तमान में सरकार ने देश के आर्थिक विकास को गति देने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास हेतु 34 लम्बित सडक और कई रेल परियोजनाओं को फिर से चालू करने तथा कोल इण्डिया लिमिटेड में 10 प्रतिशत का निवेश एवं निर्यातकों को सस्ती पूँजी उपलब्ध कराने हेतु प्रयासरत है।

शब्दकुंजी :– गतिहीनता, निवेश, सेंसेक्स, उपभोक्ता, क्रेडिट एजेंसी

----------X----------

प्रस्तावना :–

भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रायः विकासशील कहा जाता है। यद्यपि अंग्रेजी शासनकाल की तरह यहां की अर्थव्यवस्था में अब गतिहीनता नहीं है, लेकिन आजादी के बाद भी यहां पर कोई क्रांतिकारी आर्थिक विकास नहीं हुआ है। आर्थिक मामलों के जानकार आलोक पौराणिक के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था की मिश्रित तस्वीर उभरकर सामने आ रही है। उनका कहाना है ''आने वाले वर्षो में भारतीय अर्थव्यवस्था का तीन स्तरों पर वर्गीकरण हो जाएगा, एक ओर होगें, सर्विसेज सेक्टर, विदेशी निवेश और सेंसेक्स जैसे पहलू जहॉ माहौल काफी सकारात्मक है। दूसरी तरफ है मध्यम वर्ग की अर्थव्यवस्था जिसमें अपार सम्भावनाएं दिखाई पड़ती है। लेकिन कई तरह की परेशानियां भी है और तीसरे स्तर पर है एक ऐसा वर्ग जिसका ऊपर के दो वर्गो से कोई लेना –देना नहीं है, उनकी समस्याएं शायद वैसी की वैसी रहने वाली है और शायद बढ़ने वाली है'' मूलभूत ढॉचे में तेज प्रगति न होने से एक बड़ा तबका अब भी नाखुश है और एक बड़ा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नहीं हुए है।

मूल्यांकन :–

भारतीय अर्थव्यवस्था का संकट अभी बरकरार है। कृषि, सेवा, विनिर्माण तथा गैर –टिकाऊ उपभोक्ता क्षेत्र के कमजोर प्रदर्शन से औद्योगि उत्पादन की वृद्धि दर कम रही है। अंतर्राष्ट्रीय संस्था ''मुडीज इन्वेस्टर्स सर्विस'' ने अपने सर्वे में बताया है कि भारत में आंतकवादी हमलों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर उल्लेखनीय और दीर्घकालीन नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भारत में कई जगहों में अब भी सड़क बिजली और पानी जैसी मूलभूत जरूरतों की कमी है और ये तस्वीर सिर्फ गांवो की नहीं है बंगलौर जैसे शहरो की भी है। इन मूलभूत जरूरतों के अभाव में उद्योग ओर सेवा सेक्टर में जारी विकास इतनी ही गति से बरकार रह जाएगा ये भी एक बड़ा सवाल है। क्रेडिट एजेंसी क्रिसिल के निर्देशक डी.के. जोशी भारत के आर्थिक विकास को प्रसन्नता का प्रतीक बताते है। आधारभूत ढांचे ओर बेरोजगारी जैसी समस्याओं को चिंता का विषय मानते है। रोजगार के अवसरों की बात करे तो भारत मे इस समय करीब तीन करोड़ साठ लोख बेरोजगार युवा है। कहने को तो भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में से एक है लेकिन मानव विकास सूचकांक में भारत का स्थान

www.ignited.in

127 है। इससे यह प्रतीत होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर की गति धीमी है परन्तु सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए सतत् प्रयासरत है।

वैश्विक संस्था ''डॉयचे'' बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2017–18 तक देश का राजकोषीय घाटा कम होकर सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का 3.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। 2014–15 में राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 3.85 प्रतिशत रहा है। वर्तमान में प्रतिकूल वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद निरंतर जारी सुधारों से देश की आर्थिक दर बढ़ने की पूरी सम्भावना है। वित्तीय घाटा धीरे–धीरे कम किया जा रहा है ओर मंहगाई को भी धीरे–धीरे नियत्रंण में करने की कोशिश जारी है।

वित्तीय सेवा क्षेत्र की प्रमुख कम्पनी ''बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच'' (बोफा एम.एल.) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था उम्मीद से बहुत कम रफ्तार से सुधार दर्ज कर रही है। लेकिन इतनी तेजी से जरूर आगे बढ़ रही है कि ब्राजिल और रूस को पछाड़कर चीन के बाद दूसरी सबसे बड़ी उभरती अर्थव्यवस्था बनने को तत्पर है।

अन्तर्राष्ट्रीय संस्था नोमुरा (दवउनतं) ने अपनी सर्वे रिपोर्ट में इस बात का जिक्र किया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में चक्रीय सुधार का दौर जारी है। विकासदर के अलावा अगर आर्थिक प्रगति के दूसरे मापदड़ो की बात करे तो भारतीय अर्थव्यवस्था काफी बेहतर स्थिति में नजर आ रही है।

विश्लेषण :–

तालिका 1.1

भारत में क्षेत्रवार सकल मूल्य वर्धित आय वर्ष 2011–12 की कीमतों पर

(करोड रू. एवं प्रतिशत में)

क्षेत्र	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17
कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र	19,32,692 (18.64)	20,67,935 (18.03)	21,72,910 (17.45)	23,82,289 (17.32)
उद्योग	31,88,270 (30.76)	34,55,221 (30.12)	36,83,358, (29,.58)	38,89,791 (29.02)
खनन एवं उत्खनन	2,95,716 (2.85)	3,13,844 (2.74)	2,96,041 (2.38)	3,09,178 (2.25)
विनिर्माण	17,13,445 (16.53)	18,83,929 (16.42)	20,65,093 (16.58)	22,78,149 (16.57)
विद्युत,जल,गैस आपूर्ति	2,59,840 (2.51)	2,79,456 (2.44)	3,21,765 (2.58)	3,38,396 (2.46)
निर्माण	9,19,269 (8.87)	9,77,992 (8.53)	10,00,459 (8.03)	10,64,068 (7.74)
सेवा	52,45,605 (50.6)	59,47,260 (51.85)	65,95,670 (52,97)	73,78,705 (53.66)
व्यापार,होटल, परिवहन संचार	18,74,443 (18.08)	20,95,737 (18.27)	22,94,367 (18.43)	25,38,162 (18.46)
वित्त, बीमा, वास्तविक जायदाद एवं व्यावसायिक सेवाएँ	20,69,386 (19.96)	23,63,328 (20.60)	26,32,432 (21.14)	28,69,300 (21.06)
सार्वजनिक प्रशासन	13,01,476 (12.55)	14,88,595 (12.98)	16,68,871 (13.40)	19,44,243 (14.14)
G.V.A. योग	**1,03,66,266 (100)**	**1,14,70,415 (100)**	**1,24,51,938 (100)**	**1,37,50,786 (100)**

स्त्रोत – सी.एस.ओ. 2016–17 कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत में हैं।

तालिका 1.2

भारत के सकल मूल्य वर्धित आय में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान

(प्रतिशत में)

क्षेत्र	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	प्रवृति
प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, सम्बद्ध क्षेत्र एवं खनन तथा उत्खनन)	21.49	20.77	19.83	19.57	घटने की प्रवृति
द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण)	27.91	27.38	27.20	26.77	घटने की प्रवृति
तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ)	16.53 50.60	16.42 51.85	16.58 52.97	16.57 53.66	बढने की प्रवृति
सकल मूल्य वर्धित आय	**100.00**	**100.00**	**100.00**	**100.00**	

स्त्रोत – केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन।

तालिका 1.3

भारत के सकल मूल्य वृद्धि दर

(प्रतिशत में)

क्षेत्र	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17
कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र	4.2	-0.2	1.3	4.1
उद्योग	5.0	5.9	7.4	5.2
खनन एवं उत्खनन	3.0	10.8	7.4	1.8
विनिर्माण	5.6	5.5	9.3	7.4
विघुत ,गैस, जल, आपूर्ति	4.7	8.0	6.6	6.5
निर्माण	4.6	4.4	3.9	2.9
सेवा	7.9	10.3	8.9	8.8
व्यापार,होटल,परिवहन,संचार	7.8	9.8	9.0	6.0
वित्त, वास्तविक जायदाद एवं सेवाएँ	10.1	10.6	10.3	9.0
सार्वजनिक प्रशासन	4.5	10.7	6.6	112.8
सकल मूल्य वृद्धि	**6.3**	**7.1**	**7.2**	**7.0**

स्त्रोत – केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन।

1. **प्राथमिक क्षेत्र में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के साथ खनन एवं उत्खनन का प्रतिशत जोड़ा जाता है।**
2. **द्वितीयक क्षेत्र में उद्योग में से खनन एवं उत्खनन का प्रतिशत घटाया जाता है।**

स्त्रोत –सी.एस.ओ. एकोनामिक सर्वे भारत सरकार 2016–17 पेज नम्बर 140

नोट – (1) प्राथमिक क्षेत्र में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के साथ खनन एवं उत्खनन का प्रतिशत जोड़ा जाता है। (2) द्वितीयक

www.ignited.in

क्षेत्र में उद्योग में से खनन एवं उत्खनन का प्रतिशत घटाया जाता है।

भारत के सकल मूल्य –वर्धित आय की संरचना का विश्लेषण

तालिका 1.1 एवं 1.2 में देश के क्षेत्रवार सकल मूल्य वर्धित मूल्य को वर्ष 2013–14 से वर्ष 2016–17 के लिए वर्ष 2011–12 के स्थिर कीमत के आधार पर दिखाया गया है। वर्तमान में देश की आय को अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत हुए मूल्य – वृद्धि के योग के रूप में मापा जाता है। तालिका से स्पष्ट है कि –

(अ) कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का योगदान देश के सकल मूल्य वर्धित आय में वर्ष 2013–14 के 18.64 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2016–17 में 17.32 प्रतिशत हो गया है। इन 4 वर्षो में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों के योगदान में 1. 32 प्रतिशत की कमी हुई है।

(ब) उद्योग क्षेत्र का योगदान वर्ष 2013–14 के 30.76 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2016–17 में 29.2 प्रतिशत हो गया है। इसमें भी इन 4 वर्षो में 1.74 प्रतिशत की कमी हुई है। किन्तु विनिर्माण क्षेत्र का योगदान लगभग स्थिर है। वर्ष 2013–14 में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान 16.53 प्रतिशत था जो वर्ष 2016–17 में 16.57 प्रतिशत हो गया है। दूसरी ओर विनिर्माण क्षेत्र के योगदान में कमी आने की प्रवृत्ति है। यह वर्ष 2013–14 के 8.87 प्रतिशत से घटकर 2016–17 में 7.74 प्रतिशत हो गया है।

(स) सेवा क्षेत्र का योगदान वर्ष 2013–14 में 50.6 प्रतिशत था जो बढ़कर 2016–17 में 53.66 प्रतिशत हो गया है। इस क्षेत्र के योगदान में सतत् वृद्धि होने की प्रवृत्ति है। देश के सकल मूल्य वर्धित आय में 50 प्रतिशत से अधिक आय सेवा क्षेत्र से प्राप्त हो रही है। यह क्षेत्र वस्तुओं का उत्पादन नहीं करता है, केवल सेवाएँ प्रदान करता है। दूसरी ओर कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रों के योगदान में गिरावट की प्रवृत्ति है जो चिन्ताजनक है।

प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र के अन्तर्गत सकल मूल्य वर्धित आय की संरचना को देखें तो इसकी प्रवत्ति भी विभिन्न क्षेत्रों के योगदान की प्रवृत्ति के समान है। प्राथमिक क्षेत्र में उन क्षेत्रों को शामिल किया जाता है। जिनमें वस्तुओं के उत्पादन में प्रकृति का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इसीलिए प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, सम्बद्ध क्षेत्रों में पशुपालन , वानिकी एवं मत्स्य पालन को शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त, खनन एवं उत्खनन को भी प्राथमिक क्षेत्र में शामिल किया जाता है क्योंकि खनिज पदार्थ भी प्रकृति की देने होते हैं, इसीलिए द्वितीयक क्षेत्र में उद्योग में खनन एवं उत्खनन को शामिल नहीं किया जाता है। तृतीयक क्षेत्र में सेवा क्षेत्र को शामिल किया जाता है।

तालिका 1,2 मे स्पष्ट है कि –

(1) प्राथमिक क्षेत्र का योगदान देश के सकल मूल्य वर्धित आय में वर्ष 2013–14 में 21.49 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2016–17 में 19.57 प्रतिशत हो गया है। इसमें 1.92 प्रतिशत की कमी आई है। प्राथमिक क्षेत्र में गिरावट की प्रवृत्ति है।

(2) द्वितीयक क्षेत्र का योगदान सकल मूल्य वर्धित आय में वर्ष 2013–14 में 27.91 प्रतिशत था जो वर्ष 2016–17 में घटकर 26.77 प्रतिशत हो गया है। इस क्षेत्र में प्रतिशत की कमी आयी है। इस क्षेत्र में इन 4 वर्षो में गिरावट की प्रवृत्ति है। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में 1.14 विनिर्माण का योगदान वर्ष 2013–14 में 16.53 प्रतिशत था जो वर्ष 2016–17 में 16.57 प्रतिशत हो गया है। इस क्षेत्र में सामान्यतः स्थिर रहने की प्रवृत्ति है। ''मेक इन इंडिया' का विशेष प्रभाव इस क्षेत्र में दिखाई नहीं पड़ रहा है।

(3) तृतीयक क्षेत्र का योगदान वर्ष 2013–14 में 50.6 प्रतिशत था जो वर्ष 2016–17 में बढ़कर 53.66 प्रतिशत हो गया है। इस क्षेत्र में सतत् रूप से बढ़ने की प्रवृत्ति है। देश के सकल मूल्य वर्धित आय में सेवा क्षेत्र का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि 50 प्रतिशत से अधिक आय इसी क्षेत्र से प्राप्त हो रही है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र, उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों के वर्ष 2013–14 से 2016–17 मे आर्थिक वृद्धि दर को तालिका 1.3 में दिखाया गया है। कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में वर्ष 2013–14 एवं 2016–17 में आर्थिक वृद्धि दर क्रमशः 4.2 एवं 4.1 प्रतिशत है किन्तु 2014–15 में यह ऋणात्मक है जबकि वर्ष 2015–16 में वृद्धि दर मात्रा 1.3 प्रतिशत है। उद्योग के क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि दर2013–14 से वर्ष 2015–16 तक वृद्धि हुई है जबकि वर्ष्ज 2016–17 में यह घटकर 5.2 प्रतिशत रह गयी है। सेवा क्षेत्र में वर्ष 2013–14 की तुलना में अन्य वर्षो में आर्थिक वृद्धि दर ऊँची है किन्तु वर्ष 2014–15 के 10.3 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 2015–16 एवं 2016–17 में यह घटकर क्रमशः 8.9 एवं 8.8 प्रतिशत हो गया है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रतिकूल वैश्विक चुनौतियों और परिस्थितियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था अभी आगे बढ़ने में कामयाब है। विगत वर्षो में लगातार मानसून की खराब स्थिति एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था में नरमी के कारण भारत का निर्यात सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। वर्तमान में मुद्रास्फीति और विदेशी निवेश समेत अर्थव्यवस्था में चौतरफा सुधार परिलक्षित हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र साख्यिकी प्रभाग के राष्ट्रीय लेखों के अनुसार दिसम्बर 2013 के आधार पर की गई देशों की रैंकिंग के अनुसार वर्तमान मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार भारत की रैंकिग 10 और प्रतिव्यक्ति सकल आय के अनुसार भारत विश्व में 161 वें स्थान पर रही है। देश की अर्थव्यवस्था की रफ्तार में तेजी के साथ रोजगार बाजार भी सकारात्मक नजर आ रहा है।

अंत में कहा जा सकता है। कि भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत अच्छी स्थिति में नजर आ रही है। उम्मीद है कि आनेवाले

वर्षो में विकासदर और बढ़ेगी। औद्योगि एवं सेवा क्षेत्र में विकास की बदौलत भारत में विकास की गाड़ी तेजी से दौड़ तो रही हैं लेकिन अभी भी उसके सामने कई तरह की चुनौतियां है। चीन जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अनुभव किए जा रहे वित्तीय संकट के बावजूद यह एक निश्चित गति बरकार रखे हुए है। भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु नए सुधारों के ऐजेंडे से भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तथा विदेशी मुद्रा भण्डार भी बढेगा। अतः आज जरूरी हो गया है कि अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए सुधारों को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ –

भारतीय अर्थव्यवस्था – एम के मिश्र एवं वी.के. पुरी, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली 2001

आर्थिक विकास एवं नियोजन – एस.पी.सिंह, एस.चन्द एंड कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली,

आर्थिक विकास एवं नियोजन – वी.सी.सिन्हा एवं आर.एन. दुबे मयूर पेपर बॉक्स ए–95सेक्टर–5नोएडा 231331

विकास का अर्थशास्त्र – एम.एल झिंगन 149 मेन शकरपुरा मार्ग दिल्ली 92

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र – एम.एल झिंगन कोर्णाक पब्लिकेशन प्रा. लि. ए–149 मेन विकास मार्ग दिल्ली 110092

अर्थशास्त्र – डॉ जीवन लाल भारद्वाज, रामप्रसाद एंड संस भोपाल

प्रमुख आर्थिक सुधारों का विशलेषण – डॉ. जे.पी. मिश्रा (प्रसास प्रकाशन)

दिशा दर्शन – शोध पत्रिका 2015

भारतीय अर्थव्यवस्था – रूद्र दत्त एवं के.पी. सुन्दयम

दृष्टि द विजन – दृष्टि द विजन फांउडेशन 641 फस्टफयोर मुखर्जी नगर – दिल्ली 110009

icsias.com

india.com

lindiagktoday.com

ndtv.com

Corresponding Author

Dr. Arjun Singh Bhaghel*

Assistant Professor, Commerce-Rani Durgawat Govt. PG College, Mandala (MP)

E-Mail – arjunsinghb9@gmail.com